Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IVVXIIP0019

e-ISSN No. 2394-8426
DEC-2024
Issue–IV, Volume–XII

ग्रामीण महिलाओं का स्वरोजगारः रेशम उद्योग

डॉ बालेन्दु मणि त्रिपाठी,
अतिथि सहायक प्राध्यापक, विषय भूगोल, शासकीय नवीन महाविद्यालय, पेन्ड्रावन, जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़

सारांश

भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं के विकास के बिना ''विकास'' संभव ही नहीं हो सकता हैं। भारत की जनसंख्या का लगभग 72 प्रतिशत जनाधार ग्रामीण हैं अर्थात भारत अब भी ग्रामों में ही बसता है जहां से कृषि आधारित उद्योगों के माध्यम से न केवल भरण–पोषण का आधार मिलता है, अपितु रोजगार का सुलम साधन भी मिलता है। भारत के कुछ राज्यों में विशेष रूप से पहाड़ी क्षेत्र की महिलाओं के सामने ''बेरोजगारी'' की विकट समस्या हैं। न तो वे खेती कर सकती हैं। न ही आवागमन के अभाव में कोई व्यापार कर सकती हैं। ऐसे में रेशम कीटपालन एक सशक्त विकल्प के रूप में महिलाओं को स्वरोजगार का साधन उपलब्ध हैं। भारत के लगभग 50,000 गांवों में लगभग 60,00,000 लोग रेशम कीटपालन व रेशम उद्योग के माध्यम से अपना जीवन यापन कर रहे हैं। इनमें से कुछ परम्परागत राज्य हैं जैसे उत्तर भारत में जम्मू कश्मीर दक्षिण में कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश तमिलनाडु पूर्व में पश्चिम बंगाल, एवं पश्चिम में राजस्थान व गुजरात जहां रेशमी वस्त्रों का निर्माण अपनी विभिन्न कलाकृतियों से किया जाता हैं। इनमें 70–80 प्रतिशत भागीदारी महिलाओं की स्वरोजगार के रूप में होती हैं। रेशम बीजोत्पादन, रेशम कीटपालन, रेशम धामाकरण, रेशम निर्माण सामग्री (रेशम उद्योग) में कार्यकर्ता अथवा श्रमिक से लेकर वैज्ञानिक तक का कार्य महिलाएँ ही करती हैं। रेशम उद्योग एक ऐसा कुटीर उद्योग हैं जिसमें हर वर्ग की विशेषकर ग्रामीण महिलाओं को ''स्व–रोजगार'' आदि का सामान अवसर हैं। कुछ क्षेत्रों में ये महिलाएँ पुरूषों की तुलना में रेशम प्रौद्योगिकी में अपनी निपुणता साबित कर चुकी हैं। पुरुष प्रधान भारत देश में महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं अपने आत्मविश्वास से जीवन यापन करने के लिए रेशम उद्योग एवं रेशम कीटपालन एक सही दिशा में सही कदम हैं व ''स्वरोजगार'' का साधन भी हैं।

प्रस्तावना :–

रेशम उद्योग एक श्रम केन्द्रित, अल्प–निवेषित एवं कृषि आधारित लघु उद्योग हैं। यह छोटे भू–धारको के लिए उपयोगी व लाभदायक हैं। यह ऊंचे प्रतिफल तथा अल्प–प्रजनन अवधि से संबंध रखता हैं और कृषक परिवारों को रोजगार का अवसर प्रदान करता है।

भारत में रेषम उद्योग की स्थित्ति अद्वितीय हैं। वर्तमान में यह वस्त्र उद्योग तथा निर्यात में महत्वपूर्ण भूमिका निमा रहा हैं। विश्व के कुल रेशम उत्पादन में 18 प्रतिशत का योगदान भारत का हैं।

उद्देश्यः–

कृषि वानिकी पर आधारित रेशम उद्योग का प्रमुख उद्देश्य ग्राम में ही ग्रामोणों को रोजगार के लाभदायक साधन उपलब्ध कराना है। रेशम योजनाएँ मुख्य रूप से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, एवं आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के लिए कियान्वित की जा रही हैं। इस उद्योग को महिलाएँ भी घरेलू कार्य के साथ–साथ रोजगार के रूप में व्यापक रूप से अपनाती हैं।

प्रमुख किस्में :–

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ/2412IVVXIIP0019

e-ISSN No. 2394-8426
DEC-2024
Issue–IV, Volume–XII

भारत में रेशम की विभिन्न किस्में उत्पादित की जाती हैं परन्तु पांच किस्में प्रमुख हैः– मलबरी, इरी, मूंगा, टसर, तथा ओक टसर।

उद्योग एवं रोजगार :–

समुचित शिक्षा के अभाव में ग्रामीण महिलाओं के सामने रोजगार की विकट समस्या हैं। अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के लिये अपने साथी पुरूष पर ही निर्भर हैं। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें स्वरोजगार का साधन कुटीर उद्योग के रूप में उपलब्ध कराने के लिये एक सकारात्मक विकल्प रेशम उद्योग हैं।

रेशम उद्योग एवं रेशम कीटपालन कृषि आधारित एक कुटीर उद्योग हैं जिसमें महिलाओं को स्वरोजगार का साधन उपलब्ध हैं। वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार से उपलब्ध आंकड़ो के अनुसार रेशम उद्योग एवं रेशम कीटपालन में 60–70 प्रतिशत भागीदारी ग्रामीण महिलाओं की हैं जो की इस स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर हो सकती हैं।

रेशम उद्योग अथवा रेशमी वस्त्रो का भौतिक आधार कच्चे रेशम की उपलब्धता हैं जो की रेशम कीटपालन द्वारा प्राकृतिक रूप में ही उपलब्ध हो सकता है। रेशम कीटपालन में शहतूत की खेती, शहतूती रेशम अर्थात सामान्य रेशम के लिये अनिवार्य हैं क्योंकि शहतूत की पत्ती खाकर ही रेशम का कीड़ा रेशम बनाता है। दूसरे अवयव में रेषम कीटपालन घरो में रहकर करने के लिए लिए मानव श्रम की आवश्यकता अनिवार्य हैं। और यदि रेशमी धागे बनजाते हैं तो धागाकरण के माध्यम से धागा निर्माण अर्थात रेशमी कोशों के धागा बनाने की प्रक्रिया में भी मानवीय श्रम आवश्यक हैं। इस पूरे उद्योग में महिलाओं की सहायता से उद्योग को बलाने में सफलता मिल सकती हैं। यह उद्योग वर्षभर आयस्तर में वृध्दि व रोजगार का निर्माण करता है। भारत में 3 मिलियन से अधिक लोग रोरीकल्बर के विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार में संलग्न हैं जो उनके सामाजार्थिक स्तर को सुधारने के सहायक हैं। भारत में 50 हजार से अधिक गांव में रेशम उद्योग विकसित हैं तथा ग्रामीण व अर्धशहरी क्षेत्रों में 30 लाख परिवारों को समृद्धिकारक रोजगार प्रदान करता हैं। रेशम उद्योग का आर्थिक लाभ कम निवेशयुक्त उच्च रोजगार क्षमता में निहित हैं। मलबरी सिल्क का एक हेक्टेयर 12 व्यक्तियों के लिये रोजगार का निर्माण करता है। एक किलोग्राम कच्चे रेशम का उत्पादन 11 व्यक्तियों को तथा फैब्रिक सिल्क का उत्पादन 30 व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करता है।

उत्तराखंड में महिलाओं ने अपने आत्मविश्वास को पूर्णरूप से सशक्त रखकर अपने को आत्मनिर्भर बनाने के लिये ''महिला रेशम समिति'' का निर्माण किया है। कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु में रेशम कीट बीजोत्पादन का लगभग 80 प्रतिशत कार्य गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा होता हैं जो कि सरकार से तकनीकी अनुबन्ध के अनुसार रेशम बीजोत्पादन करती हैं। इन संस्थाओं में श्रमिक से लेकर वैज्ञानिक तक का कार्य महिलाएँ ही करती हैं। असम में सुनहरी रेशम की मूंगा की साड़ी. गुजरात के सूरत जनपद में रेशमी साड़ी में जरी का काम, राजस्थान में 'कैथून' में कोटा डोरिया साड़ी, बनारस में साड़ी के विपणन हेतु ''सजा–प्रजा'' में महिलाओं की भूमिका बड़ी की महत्तवपूर्ण हैं।

छत्तीसगढ़ राज्य में रेशम उद्योग अत्यंत लाभकारी उद्योगों में से एक हो सकता हैं। इसके लिए बिलासपुर व बस्तर संभाग में विकास की योजनाओं पर कार्य चल रहा हैं। बिलासपुर संभाग में रेशम परियोजना एवं बस्तर संभाग में इनोवेटिव प्रोजेक्ट स्थापित किये गये हैं। रेशम गतिविधियों में रेशम कृ मिपालन धागाकरण एवं बुनाई एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। कृमिपालन हितग्राहियों को स्वालंबन समूह गठित करने पर 6200 रूपये प्रति एकड़ की दर से चकीय राशि प्रदान की जाती हैं। ताकि वे पौधे रोपण कर रखरखाव कर सकें। राज्य में 8 रीलिंग यूनिट एवं 4 ट्विस्टिंग यूनिट स्थापित हैं जिससे धागो की गुणवत्ता में सुधार आये। टसर कोकून उत्पादन में वृद्धि, बीज तथा कोकून गुणवत्ता सुधार की दृष्टि स भारत सरकार

के सहयोग से केन्द्रीय रेशम बोर्ड के माध्यम से छत्तीसगढ़ में यूएनडीपी योजना स्वीकृत की जा चुकी हैं। छ. ग. राज्य के 16 जिलो में स्थापित रेशम केन्द्रो का प्रबंधन एवं भोगाधिकार भूमिहीन रेषम कृमिपालन महिलाओं के समूह एवं हितग्राहियों को दिया गया हैं। इसमें 0.2 हजार अनुसूचित जाति 0.7 हजार अनुसूचित जनजाति, तथा 1.4 हजार महिला हितग्राही सम्मिलत हैं। डवाकरा योजना के अंतर्गत रेशम उद्योग में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने एवं उन्हें अधिकारिक लाभ पहुंचाने की दृष्टि से वर्ष 1999–2000 में समूहों का गठन कर हितग्राहियों को रेशम कृमिपालन धागाकरण एवं बुनाई का कार्य प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से दो मिनी आई.टी.आई. की स्थापना क्रमशः सारंगगढ़ (रायगढ़) एवं रतनपुर (बिलासपुर) में की गई हैं।

छत्तीसगढ़ के प्रमुख कोसा क्षेत्र :–

बस्तर कोसा रेशम क्षेत्र बस्तर में कोसा कृमि के खाद्य वृक्ष मुख्यतः साजा एवं अर्जुन प्रचुरता में मिलते हैं। जिनमें कोसाफल (कोकून) प्राकृतिक चौर पर प्राप्त होते हैं। बस्तर संभाग में ''रैली प्रजाति'' का टसर कोसा प्रचुर मात्रा में होता हैं। जो प्रदेश में टसर उत्पादन का लगभग 65 प्रतिशत हैं। जिसे स्थानीय वनवासी वनों से एकत्रित कर हाट बाजारों में विक्रय कर आय प्राप्त करते हैं। परंतु टसर कोसा में मूल्य अभिवृद्धि के संसाधन के अभाव में अधिकांश कोसा प्रदश से बाहर चला जाता है, जिससे हितग्राही पूरक रोजगार के अवसर से वंचित रह जाते हैं अतः रैली कोसा के मूल्य अभिवृद्धि एवं पूरक रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के लिये भरतर में 457.70 लाख रूपये की ''रैली कोसा विकास परियोजना'' फरवरी 1999 से पारंग की गई हैं।

बिलासपुर कोसा एवं मलबरी रेशम का क्षेत्र बिलासपुर संभाग में प्राकृतिक तौर पर कोसा फल मिलने के साथ विभाग द्वारा मलबरी के प्लांटेशन बड़ी मात्रा में किये गये हैं। उद्योग के विकास के लिये बिलासपुर संभाग में ओ.ई.सी.एफ. जापान के सहयोग से 749.00 करोड़ रूपये लागत की परियोजना प्रारंभ की गई। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य गांव में गरीबी रेखा के नीचे जीवनयापन करने वाले परिवारों को रेशम योजनाओं के माध्यम से स्वरोजगार स्थापित कर गरीबी रेखा से ऊपर लाने एवं बढ़ती हुई रेशम की मांग की पूर्ति करना हैं। वर्तमान में बिलासपुर संभाग के सात जिलो में रेशम परियोजना कियान्वित की गई है।

शहतूती रेशम उद्योग के लाभ :– कोसा एवं शहतूती रेशम उद्योग में रेशम ने बड़ी तेजी से प्रगति की हैं। शहतूत सदाबहार विपरीत परिस्थितियों को सह सकने वाला मध्यम आकार का जल्दी बढ़ने वाला बहुउपयोगी व बहुफसलीय पौधा हैं। इससे जलाऊ लकड़ी, पत्तियों से हरा चारा खाने के लिये स्वादिष्ट एवं हितकारी फल प्राप्त होते हैं। वहीं यह पर्यावरण संतुलन में सहायक है।

अंर्तराष्ट्रीय व्यापार :–

भारत के रेशम उत्पादन के क्षेत्र में रायगढ़ जिले (छत्तीसगढ़) का प्रमुख स्थान हैं। छत्तीसगढ़ में रेशम एव कोसा केन्दो से बने धागो व वस्त्र (टसर व शहतूती) केन्द्रीय रेशम बोर्ड के माध्यम से भारतीय बाजारों के साथ–साथ विदेशों में विशेष रूप से अमेरिका, ब्रिटेन, इटली, फांस, आस्ट्रेलिया जैसे देशों को निर्यात किया जाता है। इससे देश को विदेशी मुद्रा की आय होती है।

निष्कर्ष :–

भारत में वर्तमान में रेशम उद्योग जीविकोपार्जन के स्तर से वाणिज्यिक स्तर पर पहुँच गया है। रेशम उद्योग के विकास के लिये राज्य सरकारें विभिन्न विकास कार्यक्रमों का क्रियान्वयन कर रहीं है जैसे चाकी की आपूर्ति, किसानों को सिल्कवर्ग आर्थिक सहायता पर उपलब्ध कराना, मलबरी फार्मों का विकास, संयंत्रों की आपूर्ति, किसानों को उच्च गुणवत्ता युक्त मलबरी पौधा उपलब्ध कराना तथा अतिरिक्त आर्थिक सहायता आदि। सरकार द्वारा प्रोत्साहन के कारण विभिन्न तकनीकें इस उद्योग में संलग्न हैं। फिर भी भारत में रेशम

की उत्पादकता दर नवीन तकनीकों के अपनाये जाने की धीमी गति तथा किसानों व ग्रामीण वर्ग की एक बड़ी संख्या के निम्न शैक्षिक स्तर के कारण धीमी है। फिर भी ग्रामीण महिलाएं पुरुषों की तुलना में रेशम प्रौद्योगिकी में अपनी निपुणता साबित कर चुकी है। पुरुष प्रधान भारत देश में महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं आत्मविश्वास से जीवन यापन करने के लिए रेशम उद्योग एवं रेशम कीटपालन एक सही दिशा में सही कदम है तथा ''स्वरोजगार'' का साधन भी है।

संदर्भ ग्रंथ :–

- कुरुक्षेत्र अक्टूबर 2009 पेज क्र 24–27
- कुरुक्षेत्र मार्च 2008 पेज क्र. 13–15
- छत्तीसगढ़ वृहद संदर्भ संजय त्रिपाठी एवं श्रीमती चंदन त्रिपाठी
- भारत का वृहद भूगोल चतुर्भुज मामोरिया
- म.प्र. एक भौगोलिक अध्ययन डॉ. प्रमिला कुमार